जोगारा- 7

लम्बे मेरे बाल

लट बड़े है लम्बे मेरे बाल,
चलती हुँ मै कमर को आगे निकाल।
धुंधट पट को क्या करु,
रखी हुँ आगे डाल।
सोच मे परी थी।
देख न पाये आगे ननद खरी थी,
दे दी टक्कर यार।
आखे खुली तो,
तो थे ओ मेरे पहरेदार।
जोगीरा सार रररर

लेखक एवं प्रेषकः अमर नाथ साहु